NCERT SOLUTIONS

CLASS - 11th



aglasem.com

Class : 11th

Subject : Political science

Chapter : 8

Chapter Name : धर्मनिरपेक्षता

Q1 निम्न में से कौन सी बातें धर्मनिरपेक्षता के विचार से संगत हैं? कारण सहित बताइए।

क) किसी धार्मिक समूह पर दूसरे धार्मिक समूह का वर्चस्व न होना।
ख) किसी धर्म को राज्य के धर्म के रूप में मान्यता देना।
ग) सभी धर्मों को राज्य का समान आश्रय होना।
घ) विद्यालयों में अनिवार्य प्रार्थना होना।
ड़) किसी अल्पसंख्यक समुदाय को अपने पृथक शैक्षणिक संस्थान बनाने की अनुमति होना।
च) सरकार द्वारा धार्मिक संस्थाओं की प्रबंधन समितियों की नियुक्ति करना।
छ) किसी मंदिर में दलितों के प्रवेश के निषेध को रोकने के लिए सरकार का हस्तक्षेप।

Answer.
क) यह विचार संगत है। धार्मिक वर्चस्व के स्थान पर धर्मनिरपेक्षता सभी धर्मों की पहचान की रक्षा करती है। यदि एक धर्म दूसरे धर्म से ऊंचा दिखेगा तो वह समाज धर्मनिरपेक्ष नहीं कहा जा सकता।

ख) यह संगत नहीं है। यदि राज्य किसी धर्म को राजधर्म के रूप में मान्यता देता है तो वह एक धर्मतांत्रिक राज्य बन जाएगा तथा वहां धर्मनिरपेक्षता नहीं रहेगी ।

ग) यह पूर्णतः संगत व असंगत भी नहीं है। भारतीय धर्मनिरपेक्षता की दृष्टि से देखें तो सभी धर्मों को एक नजर से देखा जाना चाहिए, परंतु पश्चिमी धर्मनिरपेक्षता सिद्धांत में राज्य किसी भी धर्म से किसी भी तरह का संबंध नहीं रख सकता

घ) यह संगत नहीं है। किसी एक धर्म की प्रार्थना को अनिवार्य कर देना दूसरे धर्म के बच्चों को कमतर दिखाने का प्रयास लगता है। यह धर्मनिरपेक्षता के विरुद्ध है।

ड़) यह संगत है। अल्पसंख्यक समुदाय को विशेष स्थान देना भारतीय धर्मनिरपेक्षता की विशेषता है। इससे समाज में उन्हें एक स्थान मिलता है और विकास के समान अवसर मिलते हैं।

च) यह संगत नहीं है। यह धार्मिक मामलों में राज्य की सैद्धांतिक दूरी का उल्लंघन होगा। किसी धार्मिक संस्था की प्रबंधन समिति में सदस्यों की नियुक्तियों में सरकार का हस्तक्षेप धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत के विरुद्ध है।

छ) यह संगत है। ऐसा करके सरकार छुआछूत का निराकरण करती है और समाज में समानता और भाईचारा लाने का प्रयास करती है। इससे यह भी पता चलता है कि भारत में राज्य व धर्म पूरी तरह से अलग नहीं होते हैं।

Page : 123 , Block Name : प्रश्नावली

Q2 धर्मनिरपेक्षता के पश्चिमी और भारतीय मॉडल की कुछ विशेषताओं का आपस में घालमेल हो गया है। उन्हें अलग करें और एक नई सूची बनाएं।

पश्चिमी धर्मनिरपेक्षता	भारतीय धर्मनिरपेक्षता
धर्म और राज्य का एक दूसरे के मामले में हस्तक्षेप न करने की अटल नीति	राज्य द्वारा समर्थित धार्मिक सुधारों की अनुमति
विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच समानता एक मुख्य सरोकार होना	एक धर्म के भिन्न पंथों के बीच समानता पर जोर देना
अल्पसंख्यक अधिकारों पर ध्यान देना	समुदाय आधारित अधिकारों पर कम ध्यान देना
व्यक्ति और उसके अधिकारों को केंद्रीय महत्व दिया जाना	व्यक्ति और धार्मिक समुदायों दोनों के अधिकारों का संरक्षण

Answer.

पश्चिमी धर्मनिरपेक्षता	भारतीय धर्मनिरपेक्षता
धर्म और राज्य का एक दूसरे के मामले में हस्तक्षेप न करने की अटल नीति	राज्य द्वारा समर्थित धार्मिक सुधारों की अनुमति
विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच समानता एक मुख्य सरोकार होना	एक धर्म के भिन्न पंथों के बीच समानता पर जोर देना
समुदाय आधारित अधिकारों पर कम ध्यान देना	अल्पसंख्यक अधिकारों पर ध्यान देना
व्यक्ति और उसके अधिकारों को केंद्रीय महत्व दिया जाना	व्यक्ति और धार्मिक समुदायों दोनों के अधिकारों का संरक्षण

aglasem.com

Page : 123 , Block Name : प्रश्नावली

Q3 धर्मनिरपेक्षता से आप क्या समझते हैं? क्या इसकी बराबरी धार्मिक सहनशीलता से की जा सकती है।

Answer. धर्मनिरपेक्षता से तात्पर्य एक ऐसी व्यवस्था से है जिसमें सभी धर्मों को एक समान दृष्टि से देखा जाता है तथा किसी धर्म को प्राथमिकता नहीं दी जाती है। यह लोकतांत्रिक देश की एक महती आवश्यकता होती है। धर्मनिरपेक्षता की बराबरी धार्मिक सहनशीलता या सहिष्णुता से की जा सकती है।
धार्मिक सहनशीलता से आशय यह है कि लोग अपने धर्म की बातों के अलावा दूसरों के धर्मों का भी सम्मान करते हैं। उदाहरण के लिए एक हिंदू आदमी भले ही कुरान न पढ़ता हो पर वह धार्मिक सहनशीलता के चलते कुरान का सम्मान करता है क्योंकि वह एक धार्मिक ग्रंथ है। यह एक धर्मनिरपेक्ष समाज को दिखाता है।
अतः हम यह कह सकते हैं कि यदि किसी देश के समाज में धार्मिक सहनशीलता है तो धर्मनिरपेक्षता भी उतनी ही प्रबल होती है क्योंकि विभिन्न समुदायों में समानता धर्मनिरपेक्ष राज्य की विशेषता है।

Page : 124 , Block Name : प्रश्नावली

Q4 क्या आप नीचे दिए गए कदमों से सहमत हैं? उनके समर्थन या विरोध के कारण भी दीजिए।

क) धर्मनिरपेक्षता हमें धार्मिक पहचान बनाए रखने की अनुमति नहीं देती है।
ख) धर्मनिरपेक्षता किसी धार्मिक समुदाय के अंदर या विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच असमानता के खिलाफ है।
ग) धर्मनिरपेक्षता के विचार का जन्म पश्चिमी और ईसाई समाज में हुआ है। यह भारत के लिए उपयुक्त नहीं है।

Answer.
क) यह कहना सही नहीं है। धर्मनिरपेक्षता धार्मिक वर्चस्व स्थापित करने की अनुमति नहीं देती है। धर्मनिरपेक्षता से धार्मिक पहचान को खतरा होना महज एक भ्रम है। अपितु यह तो सभी के धार्मिक पहचान की रक्षा करती है ।

ख) यह सही कथन है। अंतर धार्मिक और अंतः धार्मिक समानता धर्मनिरपेक्षता की महत्वपूर्ण घटक हैं। भारतीय धर्मनिरपेक्षता ने तो इस बात पर विशेष ध्यान दिया है। हाल ही में पारित हुआ तीन तलाक कानून मुस्लिम महिलाओं के हितों की रक्षा व समाज में उन्हें अन्य धर्मों की महिलाओं के साथ समानता दिलवाता है। यह व्यवस्था हमें हर धर्म के प्रति सहनशील भी बनाती है।

aglasem.com

ग) ऐसा कहना तर्कसंगत नहीं है। भारत और पश्चिमी देशों की धर्मनिरपेक्षता में काफी अंतर है। भारत में धर्मनिरपेक्षता के लक्ष्य पश्चिमी राज्यों से अलग हैं। पश्चिम में धर्म और राज्य पूर्ण रूप से अलग हैं, जबकि भारत में ऐसा नहीं है। भारत में धर्म व राज्य के मध्य एक तरह की सैद्धांतिक दूरी है जो एक बार को तो पश्चिम की नकल लग सकती है पर असल में ऐसा नहीं है। अतः भारत में धर्मनिरपेक्षता, धार्मिक समानता व भाईचारे के लिए आवश्यक है।

Page : 124 , Block Name : प्रश्नावली

Q5 भारतीय धर्मनिरपेक्षता का जोर धर्म और राज्य के अलगाव पर नहीं वरन उससे अधिक इन्हीं बातों पर है। इस कथन को समझाइए।

Answer. आमतौर पर यह समझा जाता है कि कोई राज्य धर्मनिरपेक्ष तभी है जब धर्म और राज्य एक दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करते। भारतीय संदर्भ में यह कहना गलत होगा।

भारत में धर्मनिरपेक्षता कभी धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप की इजाजत देती है तो कभी सैद्धांतिक दूरी रख बनाए रखने की अपेक्षा करती है। यदि हिंदू धर्म में दलितों पर अत्याचार हो रहा है, मुस्लिम समाज में महिलाएं तीन तलाक से परेशान हैं, जन समुदाय में संथारा नामक उपवास से मृत्यु का खतरा है, तो राज्य को यह अधिकार है कि वह धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करें और एक खुशहाल व समानता पूर्ण समाज का निर्माण करें।

अतः हम कह सकते हैं कि भारतीय धर्मनिरपेक्षता का जोर राज्य और धर्म के अलगाव पर ना होकर धार्मिक कुरीतियों, छुआछूत व असमानता जैसी बातों को मिटाने पर है।

aglasem.com

Page : 124 , Block Name : प्रश्नावली

Q6 'सैद्धांतिक दूरी' क्या है? उदाहरण सहित समझाइए।

Answer. सैद्धांतिक दूरी भारतीय धर्मनिरपेक्षता से जुड़ी एक महत्वपूर्ण विशेषता है। इसका आशय यह है कि राज्य किसी भी धार्मिक मामलों में तब तक हस्तक्षेप नहीं करेगा जब तक कि उन मामलों के चलते किसी व्यक्ति विशेष के मूलभूत अधिकारों, आत्मसम्मान का हरण नहीं होता है। उदाहरण के लिए यदि कोई धार्मिक समुदाय बिना किसी व्यक्ति को नुकसान पहुंचाए अपनी धार्मिक नीतियां निभाता है तो राज्य उसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकता, परंतु यदि वही धार्मिक समुदाय कम उम्र की बालिकाओं को देवदासी प्रथा में लिप्त करने को धार्मिक प्रथा

बताते हैं तो ऐसे में सरकार द्वारा उन बालिकाओं की मदद करना आवश्यक होता है जिससे वह बालिकाओं के जीवन के अधिकार की रक्षा करती है।

राज्य तब तक भी धार्मिक मामलों से सैद्धांतिक दूरी बनाए रखेगा जब तक कि एक धार्मिक समुदाय किसी दूसरी धार्मिक समुदाय के वर्चस्व या पहचान को हानि न पहुंचाता हो।

अतः सैद्धांतिक दूरी यह बताती है कि एक सीमा तक ही राज्य व धर्म अलग रहेंगे, परंतु आवश्यकता पड़ने पर यदि राज्य धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करता है तो वह धर्मनिरपेक्षता का उल्लंघन नहीं होगा। सैद्धांतिक दूरी तभी तक बनी रहेगी जब तक धार्मिक मामले भारतीय संविधान, धार्मिक सौहार्द्र, समानता, स्वतंत्रता और उदारता को आहत नहीं करते हों।

Page : 124 , Block Name : प्रश्नावली

aglasem.com